थियोसोफी आंदोलन (1675)

आधुनिक भारत के राजनीतिक पुनर्जागरण के विकास एवं प्रगति में एक ऐसे धार्मिक आंदोलन ने योगदान किया जिसका जन्म भारत में नहीं, अमेरिका में हुआ था। इस आंदोलन का नाम था थियोसोफिकल सोसाइटी जो आर्य समाज से भी अधिक अपरिवर्तनवादी और अधिक रहस्यवादी थी। मादाम ब्लावात्स्की (1831-1891) जो रूसी महिला थी और कर्नल आल्कट (1823-1907), जो अमेरिकी नागरिक थे, ने न्यूयार्क में उसी वर्ष (1875) थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की थी, जिस वर्ष स्वामी दयानंद ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी। सोसाइटी के संस्थापक भारत में जनवरी, 1879 में पहुँचे और उन्होंने 1882 में (दिसम्बर) अड्यर (मद्रास) में सोसाइटी का मुख्यालय स्थापित किया जिसकी शीघ्र ही अनेकानेक शाखाएँ भारत के विभिन्न नगरों में खुल गईं। 1880 में श्रीमती एनी बेसेंट (1847-1933) इंगलैंड में इस सोसाइटी की सदस्या बन गई। सोसाइटी में इनका प्रवेश बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ।

---

1. वही, पृ० 220

श्रीमती एनी बेसेंट

भारत में थियोसोफिकल आंदोलन को शिखर पर पहुँचाने का श्रेय एनी बेसेंट को ही दिया जाता है। वह बर्नार्ड शॉ, डब्ल्यू० टी० स्टीड, ए० पी० सिनेट, ब्राडला और मजदूर सभाइयों जैसे उग्र चिंतकों और राजनेताओं की मंडली में मशहूर थीं। उन्होंने अगले पाँच वर्षों तक अध्ययन और अध्यापन में व्यतीत किए। वह 1893 में संयुक्त राज्य अमेरिका गई और शिकागो के धर्म-सम्मेलन में शामिल हुई। वहीं उन्हें भारत की संस्कृति एवं धर्म के प्रति आकर्षण हुआ। उन्होंने भारत में बसने का संकल्प लिया। उन्होंने यह घोषणा की—'हृदय से मैं तुम्हारे साथ हूँ और संस्कारों से भी मैं तुम्हीं लोगों में से एक हूँ।' नवम्बर, 1893 में वह तूतीकोरिन में जहाज से उतरीं और उसी समय से उन्होंने भारत में क्रांति ला दी। भारतीयों ने खुले हृदय से उनका स्वागत किया। अपने जीवंत व्यक्तित्व और असाधारण ववतृत्व-शक्ति के कारण उन्होंने जल्दी ही शिक्षित भारतीयों को सोसाइटी का सदस्य बनने को बाध्य किया। भारत में सोसाइटी के कार्य में उन्होंने जीवनार्पण कर दिया। वह परम्परागत हिंदू धर्म के व्याख्यान देती हुई तथा शिक्षालयों की स्थापना करती हुई समस्त भारत में घूमती रही। पुस्तकें लिखकर, पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन करके उन्होंने सोसाइटी के विचारों और सिद्धांतों का प्रचार किया और सोसाइटी को लोकप्रिय बनाया।

एनी बेसेंट ने हिंदू धर्म को स्वीकार किया और इसकी श्रेष्ठता के प्रति सम्भाषण किया। उन्होंने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त कर भारतीयों के हृदय में हिंदू धर्म के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम पैदा किया। शिक्षित मध्यमवर्गीय लोग उनके अनुगामी होने लगे। कुछ लोग तो इस बात से प्रभावित हुए कि 'एक प्रसिद्ध श्वेतांग महिला हिंदू धर्म पर धारा प्रवाह भाषण दे रही है और उन बातों का समर्थन कर रही है, जिनकी ईसाई मिशनरियों तथा यूरोपीय लेखकों ने कुसंस्कार या बुराई कहकर निंदा की थी। इससे इन लोगों को आंतरिक बल और अपसे धर्म-सुधारकों के आक्रमणों के विरुद्ध एक ढाल प्राप्त हुई।'

बेसेंट ने विश्वबंधुत्व की भावना को पैदा करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा था कि 'सारे धर्म सत्य हैं और सभी मनुष्य भाई-भाई हैं।' ऐसे वातावरण में, जिसमें गोरों की नस्ली श्रेष्ठता की डींगें गूँज रही थीं, और हिंदू धर्म की निंदा से कान भरे जा रहे थे, एक प्रसिद्ध गोरी महिला एनी बेसेंट तथा उनके साथियों द्वारा इस धर्म के समर्थन का बड़ा प्रभाव पड़ा। उनका कथन था—'जिस भारत को मैं हृदय में अपना चुकी हूँ और उसकी सभ्यता ऐसी है, जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान का सबसे ऊँचा स्थान था, लोग आध्यात्मिक सत्य की कद्र करते थेऔर उसकी खोज करते थे। मैं जिस भारत के निर्माण के लिए जीवन अर्पण करना चाहती हूँ वह एक ऐसा भारत है जिसका मुँह सब देशों को आध्यात्मिक जीवन के निमित्त ताकना चाहिए।'[1]

एनी बेसेंट के सामाजिक सुधार के कार्य भी प्रशंसनीय हैं। उन्होंने मानव

---

1. जियोफ्रे वेस्ट; लाइफ ऑफ एनी बेसेंट, पृ० 206

मात्र की समानता का सिद्धांत दिया। उनका कहना था कि सब मनुष्य दैवी प्रकृति से युक्त हैं, अतः वे सभी समान हैं। उन्होंने चार वर्णों पर आधारित जाति व्यवस्था का समर्थन किया। उन्होंने हिंदू लड़कियों को शिक्षित किए जाने का पक्ष लिया और उनके तर्क के फलस्वरूप विवाहित छात्राओं का हिंदू कॉलेज (बनारस) में प्रवेश निषेध कर दिया गया। उन्होंने अपनी कृति 'ऐंसियंट आयडियल इन मोडर्न लाइफ' में हिंदू समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियों की भर्त्सना और आलोचना की। उन्होंने जाति-प्रथा की भी निंदा की। उन्होंने अपनी दूसरी कृति 'ए प्ली फोर सोशल रिफार्म' में जाति व्यवस्था की कटु आलोचना की।

एनी बेसेंट अथवा सोसाइटी के जिस कार्य को हिंदू समाज की भरपूर प्रशंसा मिली थी, वह था भारत के नवयुवकों की शिक्षा का कार्य। इस दिशा में उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी—1898 में वाराणसी में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना जो 1915 में मदनमोहन मालवीय के प्रयत्नों से हिंदू विश्वविद्यालय बना। साधारण शिक्षा के एक अंग के रूप में यहाँ हिंदू धर्म की पढ़ाई जारी की गई। लड़कों, लड़कियों एवं दलित वर्ग के लिए यत्र-तत्र विद्यालय खोले गए। इन सारी शिक्षा संस्थाओं में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया गया जिसमें धार्मिक पाठ्यक्रम, मातृभाषा और राष्ट्रीय गौरव को जागृत करने वाले विषयों को सम्मिलित करने का सिद्धांत दिया गया। उनकी शिक्षण योजना में इतिहास और साहित्य (दोनों भारत के) को स्थान दिया गया। बेसेंट ने संस्कृत के महत्त्व को स्वीकार किया था। उनकी राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति, राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वतंत्रता और नागरिकता की भावना के विकास में सहायक बनी। 1903 में उन्होंने समग्र भारत के सुधार की बात व्यक्त की थी जिसमें उनकी राजनीतिक आस्था की भी बात थी। उन्होंने कहा था—'भारत को भारतीय भावनाओं, भारतीय परंपराओं, भारतीय चिंतन और भारतीय विचारों के आधार पर शासित होना चाहिए।'[1]

एनी बेसेंट की राजनीतिक सेवाओं से भारतवासी उपकृत हुए। उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन की समाप्ति और भारतीयों के लिए स्वशासन करने का अधिकार प्रदान किए जाने की मांग अनेक आधारों पर की—ब्रिटिश शासन ने परम्परा से चले आने वाले भारत के ग्राम स्वराज को विनष्ट करके उसके स्थान पर बोर्ड और कौंसिलों की वर्णसंकर पद्धति की स्थापना की जो जनसाधारण का कल्याण नहीं कर सकती थी; शिक्षा के क्षेत्र में ब्रिटिश शासन ने 80 वर्षों में भारतीय जनता के केवल 2·6 प्रतिशत भाग को शिक्षित किया जबकि जापान ने केवल 40 वर्षों में अपनी समस्त जनता को शिक्षित कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश शासन ने भारत के उद्योगों और ललित कलाओं को नष्ट करके भारत में सस्ती विदेशी वस्तुओं का आयात बढ़ाकर भारत को निर्धन बनाया। पुनश्च, ब्रिटिश शासन ने सिंचाई की उपेक्षा करके भारत की कृति एवं स्वास्थ्य को चौपट किया। शासन निरंकुश था और दमन पर आधारित था।

इसलिए एनी बेसेंट ने स्वशासन की माँग की जिसे 'होम रूल' कहा गया।

---

1. वही, उद्धृत, पृ० 221

उन्होंने भारत के राष्ट्रवादी नेताओं और लोगों की मदद पाकर 1915-17 में होम रूल आंदोलन भी प्रारंभ किया। उन्होंने भारतवासियों को राजनीतिक स्वतंत्रता की प्रगति के लिए प्रयत्न करने हेतु चेतावनी देते हुए लिखा था कि 'राष्ट्र के जीवन से संबंधित विषयों में भारत का ब्रिटिश शासन अक्षम रहा है जिससे भारत धीरे-धीरे दुर्बल होता जा रहा है, और यदि उसे स्वशासन का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ तो वह अनिवार्य रूप से नष्ट हो जाएगा। इस गोरी महिला ने 'न्यू इंडिया' तथा 'कॉमन बिल' समाचार-पत्रों के जरिए अपनी स्वतंत्रता संबंधी भावना एवं विचारों को व्यक्त किया। 'आवर कोर्नर' 'नेशनल रिफॉर्मर' तथा 'द लिंक' नामक पत्रिकाओं ने भी उनके विचारों से भारतीयों तथा ब्रिटिश शासकों को अवगत कराया। भारत की खातिर इस महिला ने जेल की यातना भी सही।

संक्षेप में, एनी बेसेंट ने हिंदू धर्म को श्रेष्ठ मानते हुए भी यह स्वीकार किया कि सभी धर्म ईश्वरीय हैं, उनके कर्मों में एकता और समन्वय पर अधिक बल दिया गया। द्वितीय, एनी बेसेंट ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय संस्कृति ईश्वरीय शक्ति की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। इससे अंगरेज साम्राज्यवादियों के इस दावे का खंडन हुआ कि यूरोप की गोरी जातियाँ ही सभ्य हैं और उन्हें ईश्वर ने संसार की अन्य जातियों को सभ्य बनाने के लिए नियुक्त किया है। तृतीय, उन्होंने यह कहा कि भारत का एक विशेष ध्येय है—उसे ईश्वर ने आध्यात्मिक संदेश देने के लिए बनाया है। इस दृष्टि से एनी बेसेंट ने स्पष्ट रूप से तिलक के इस आदर्श का समर्थन किया कि स्वतंत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।